पुण्य स्मृति दिवस - 12 मई 2001

बहु-आयामी व्यक्तित्व, प्रखर प्रज्ञा युक्त जगदीशचन्द्र

ये ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने अपना पूरा जीवन प्रभु प्रेम और निःस्वार्थ समाज सेवा हेतु समर्पित किया। सभी महान कार्य करते हैं, लेकिन इन्होंने सबके जीवन को एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व में बदला, और ऐसा बदला कि आज वो जिस भी क्षेत्र में हैं, हर क्षेत्र में महान कर्म कर रहे हैं। उनकी प्रेरणामयी शिक्षायें, उनके जीवन के जीने का आधार बन चुकी हैं। सभी आज भी उनका इसी बात से गुणगान करते थकते नहीं कि वो हमारे लिए एक सफल मार्गदर्शक, समाज सुधारक, दार्शनिक, चिंतक सबकुछ थे। वो अनेकानेक में एक थे। उनके इस अनेकानेक स्वरूप को हम थोड़ा और समझते हैं, जानते हैं और उनके विचारों को आपके सामने रखते हैं...

- राजयोगी
ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

राजयोगी जगदीश जी का जन्म 10 सितम्बर 1929 को मुल्तान शहर जो वर्तमान समय पाकिस्तान में पंजाब प्रांत का एक जिला है वहाँ हुआ। ये शहर संत, महंत एवं सूफियों का है। हिंदु पुराणों के अनुसार इस शहर का नाम कश्यपुर था। राजयोगी जगदीश जी का पूरा नाम जगदीश चन्द्र हसीजा था। इनके पिता ज़मींदार थे। भारत का बंटवारा होने के बाद ये हरियाणा प्रांत में आये। आप बचपन से ही धर्म, ज्ञान, योग और देशभक्ति, समाजसेवा में दिलचस्पी लेते थे। बारह साल की उम्र से ही आप संत, महंत और सूफियों के पास जाया करते थे और चर्चा किया करते थे। घर में सब आपको ऋषि नाम से ही बुलाते थे। आप शुरु से ही भगवान की खोज में आतुर थे। विद्यार्थी जीवन में आपके अंदर देशभक्ति और समाजसेवा कूट-कूट कर भरी हुई थी। आप ब्रह्माकुमारीज़ से 1952 में रूबरू हुए। आपकी साप्ताहिक कोर्स की टीचर राजयोगिनी दादी कुंज थीं जो पटना ज़ोन की इंचार्ज थीं।

कैसी थी आपकी दिनचर्या

आपकी दिनचर्या सुबह दो बजे शुरु होती थी। आप उठने के बाद सबसे पहले लिखने का काम ही करते थे। चूंकि रुचि जिसमें सबसे ज़्यादा होती है, हम सबसे पहले वही काम करते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ के साहित्य की जितनी भी पुस्तकें हैं सबको आपने ही एक नया आयाम और मुकाम दिया है।

विद्यालय नाम में भी आपका सहयोग

सर्वप्रथम इस संस्था का नाम ओम मंडली था, जोकि एक सत्संग की तरह था। बाद में इस संस्था का नाम प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय पड़ा, जिसमें सारा श्रेय जगदीश भाई साहब को जाता है। इसमें क्या पाठ्यक्रम होना चाहिए, कैसी शिक्षा पद्धति होनी चाहिए आदि चीज़ें इस संस्था के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने जगदीश भाई साहब से कराया।

इकोनॉमी(मितव्ययी) तथा श्रेष्ठ कर्म के प्रति समर्पित

आपको ज़्यादा खर्च करना पसंद नहीं था। हर कार्य को लेकर वो कहते थे कि कार्य चीपेस्ट और बेस्ट होना चाहिए। वे एक महान योगी, महान तपस्वी और महान सेवाधारी थे। उनके अंदर ज्ञान समझने की कला विशेष थी। वो जहाँ पहुँचते थे वहाँ का वायुमण्डल बदल जाता था। हर स्थान पर जाकर यही कहते कि आप लोग ज़्यादा किसी भी चीज़ पर खर्चा नहीं करो, कम में काम चल सके तो चलाओ। वे साधनों पर कम और साधना पर अधिक विश्वास करते थे। जब वो बोलते थे तो ऐसा लगता था जैसे उनकी जिह्वा से साक्षात सरस्वती की उद्घोषणा हो रही है। वे हर एक बात को वैज्ञानिक तरीके से सबके सामने रखते थे।

महान योगी और अर्थशास्त्री

वे एक महान योगी और अर्थशास्त्री थे। वे जहाँ भी जिस विषय पर कार्यक्रम होता उस विषय को तैयार कर लेते और उस अनुसार ही भाषण करते। दधीची ऋषि आफिक मु इन्होंने अपनी हड्डी-हड्डी सेवा में दी। उनकी सिर्फ दो इच्छायें थीं कि शिव बाबा को कैसे प्रत्यक्ष करें तथा दूसरी कि स्वर्णिम युग की संरचना की गतिविधि क्या होगी। भाई साहब द्वारा लिखी पुस्तकों का अध्ययन करने से पता चलता है कि उनकी प्रखर प्रज्ञा कितनी शक्तिशाली थी। हम आपको अपने अनुभव से बताना चाहेंगे कि उनकी एक पुस्तक है, योग की विधि और सिद्धि। इस पुस्तक में भ्राता जी ने सम्पूर्ण योग को अलग अलग विधियों से सबके समक्ष रखा है। पढ़ने के बाद योग के बारे में आपको कोई भी जिज्ञासा नहीं रहेगी।

अविनाशी विश्व नाटक का वृहद ज्ञान

उनकी एक और पुस्तक है, 'अविनाशी विश्व नाटक', जिसको कोई भी किसी भी क्षेत्र का हो इसको पढ़ सकता है, लेकिन इसे पढ़ने के लिए आपको बहुत धैर्य चाहिए। इसमें आपके हर सवाल का जवाब है। इतने सारे प्रमाण, इतने सारे साक्ष्य पता नहीं कहाँ-कहाँ से उठाकर रखा है कि कोई व्यक्ति ये ना कह सके कि ये बात कहाँ कही गई है। ऐसे बहुमुखी प्रतिभा के धनी भाई साहब के बारे में जितनी बातें कही जाए कम है। ऐसे व्यक्तित्व को दुबारा इस जग में देखने की लालसा किसे नहीं होगी! धन्य हैं वे माता पिता जो ऐसे विदुषक के माता पिता बने। जिन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ यज्ञ को एक नया मुकाम और नया आयाम दिया। उनके स्मृति दिवस पर हम सभी परमात्मा के इस यज्ञ के रक्षक ब्रह्मावत्सों की तरफ से सच्ची पुष्पांजलि।

नागौर-राज.। त्रिमूर्ति शिवजयंती के अवसर पर विधायक मोहन सिंह को आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. अनीता।

दिल्ली-लोधी रोड। केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो-सीबीआई में 'तनाव मुक्त जीवन शैली' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में योगेश कुमार,निरीक्षक, ब्र.कु. पीयूष, ब्र.कु. गिरिजा तथा अन्य।

दिल्ली-पालम। सैनिकों के परिवारों को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् चित्र में ऑफिसर्स के परिवार के साथ ब्र.कु. सरोज, ब्र.कु. दीपिका तथा ब्र.कु. अमर सिंह।

रामपुर-बुशहर(हि.प्र.)। शिवजयंती के कार्यक्रम में शिवध्वजारोहण के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में तहसीलदार विपिन ठाकुर, ब्र.कु. कृष्णा, डॉ. सचिन, मीनू भाई, देवराज भाई, चरण भाई तथा अन्य भाई-बहनें।

दिल्ली-बख्तावरपुर। शिवजयंती के अवसर पर शोभा यात्रा का शुभारंभ करने के पश्चात् डॉ. महेश चौधरी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गीता।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रूपये, तीन वर्ष 600 रूपये, आजीवन 4500 रूपये। विदेश - 2500 रूपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।